## चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
## जुलाई 2018 महीने के पहले पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

**प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने जुलाई 2018 माह के पहले पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।**

### धान

- धान की रोपाई 7 जुलाई तक की जा सकती है। समय पर रोपाई के लिए 20 X 15 सै. मी. की दूरी पर पौध लगाएं। एक स्थान में केवल एक या दो पौध लगाएं। रोपाई के 5 व 10 दिन के बाद खाली स्थानों में पौध की पुनः रोपाई करें।
- खरपतवार नियंन्त्रण के लिए 30 कि. ग्रा. मैचिटी (5 प्रतिशत) 4-5 सै. मी. खड़े पानी में या 3 लीटर मैचिटी (50 ई. सी.) को 150 कि. ग्रा. रेत में मिलाकर खड़े पानी में रोपाई के 4-5 दिन बाद प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

### मक्की

- जिन खेतों में मक्की की बुआई जून के प्रथम पखवाड़े में की गई है उनमें 65-85 किलोग्राम यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

### दलहनी फसलें

- माश की हिम माश-1, यू.जी.-218, पन्त यू-19 (निचले व मध्यवर्ती क्षेत्रों में), पालमपुर-93 किस्में (मध्यवर्ती क्षेत्रों में), तथा मूंग की सुकेती-1, एस.एम.एल.-668 तथा कुल्थी की एच.पी.के.-4 (वैजू) व बी.एल.जी-1 किस्म लगाऐं। इन फसलों की बुआई केरा विधि से करें। पंक्तियों से पंक्तियों का फासला एक फुट रखें।
- बुआई के समय मिश्रित खाद एन. पी. के . (12:32:16) 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर डालें। जब इन फसलों को मक्की के साथ बोना हो तो नाइट्रोजन खाद न डालें।
- खरपतवार नियन्त्रण के लिए लासो 3 लीटर या स्टाम्प 4.5 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से बुआई के 48 घन्टें के अन्दर छिड़काव करें।

### तिलहनी फसलें

- सूरजमुखी की ई.सी.-68415 किस्म की बुआई करें। एक हैक्टेयर के लिए बीज की मात्रा 10-12 किलोग्राम रखें।
- बीज को बुआई से पहले कैपटॉन दवाई 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर लें।
- पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सैंटी मीटर रखें और पौधे से पौधे का फासला 25-30 सैंटीमीटर रखें।
- तिल की पंजाब तिल नं. 1 या ब्रजेश्वरी किस्मों की बुआई करें। एक हैक्टेयर के लिए 5 कि.ग्रा. बीज डालें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सैंटीमीटर रखें ।

### सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में फूलगोभी की दरम्याना किस्मों पालम उपहार, इम्प्रूवड जापानीज़, पूसा दीपाली, तथा मेघा (संकर) की पनीरी दें। पनीरी उगाने के लिये तीन मीटर लम्बी, एक मीटर चौड़ी तथा 10-15 सैंमी. ऊँची क्यारी में 20-25 कि.ग्रा. गली सड़ी गोबर की खाद, 200 ग्राम इफको मिश्रण खाद, 15-20 ग्रा. इण्डोफिल एम-45 तथा 15-20 ग्रा. थीमेट मिट्टी की ऊपरी सतह में डाल कर कतारों में 5 सैं.मी. की दूरी पर बीज की पतली बीजाई करें।
- बन्दगोभी की तैयार पौध को खेतों में 45 X 45 सैं.मी. की दूरी पर रोपाई करें। रोपाई के पूर्व 200 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 280 कि.ग्रा. 12:32:16 मिश्रण खाद व 90 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर खेतों में डालें।
- फूल आने पर टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, लाल मिर्च तथा कद्दू वर्गीय सब्ज़ियों में नत्रजन की मात्रा (40-50 कि. ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर) खेतों में डालें।

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

- ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मटर की सुधरी प्रजातियों जैसे पालम समूल, पंजाब-89, लिंकन, आजाद पी 1, पालम प्रिया की बीजाई करें। बीजाई के समय 200 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 187 कि.ग्रा. (12:32:16) मिश्रण खाद तथा 50 कि.ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हैक्टेयर खेतों में डालें। बीजाई के तुरन्त बाद खरपतवार नाशक रसायनों जैसे लासो/एलाक्लोर या स्टाम्प (पैण्डिमिथेलिन) (4.5 लीटर प्रति 750 लीटर पानी प्रति हैक्टेयर) का घोल बनाकर छिड़काव करें।

**फसल संरक्षण**

- बैगन की फसल में तना व फल छेदक कीट तथा टमाटर व भिण्डी में फल छेदक सुण्डी के नियन्त्रण के लिए 2 ग्राम कार्बरिल 50 डब्ल्यू.पी. या 0.5 मि.ली. फैनबलरेट (सुमिसिडीन/एग्रोफैन 20 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल बना कर) छिड़काव करें। भिण्डी में धारीदार भृंग (लाल, पीली व काली धारियों वाला कीट जो फूल खाता है) तथा बैंगन व करेले में हड्डा भृंग के नियन्त्रण के लिये कार्बेरिल (सेविन 50 डब्ल्यु.पी.) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी हिसाब से छिड़काव करें।
- टमाटर तथा कद्दूवर्गीय सब्ज़ियों में फल मक्खी के नियन्त्रण के लिये जमीन पर गिरे हुए फलों को इक्ट्ठा करके नष्ट कर दें तथा आसपास की झाड़ियों व फल मक्खी के बैठने के स्थानों पर मैलाथियॉन (10 मि.ली) तथा गुड़ (50 ग्रा.) के मिश्रण को 5 लीटर पानी में घोल कर फूल व फल बनने की अवस्था पर छिड़काव करें। खेतों में योन गन्ध ट्रेप लगायें (प्रति कनाल (400 वर्गमीटर) में एक ट्रैप पर्याप्त होता है) बैंगन व टमाटर में फल सड़न की रोकथाम के लिये रिडोमिल एम जैड या मेटको (25 ग्रा. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

**पशुधन**

- इस मौसम में पशुओं में गर्माने के लक्षण तीव्र नहीं होते अतः सुबह व सांय इन लक्षणों का पता योनि की लार से लगाऐं।
- नवजात बच्चों की देखभाल बहुत आवश्यक है। जन्म लेने के दो घण्टे के अन्दर बौली/कीड़/खीस अवश्य पिलाएं। एक दिन के लिए बौली बछड़े के भार का 1/10 दिन में तीन चार बार दें । इससे बिमारियों से बचाव होता है एवं कीड़ विटामिन का अच्छा स्त्रोत है
- यदि पशुओं को घाव हो जाऐं तो 2-4 प्रतिशत फिनाईल के घोल से धोकर साफ कर लें। यदि कीड़े पड़ गए हो तो उन्हें निकाल कर लोरेक्सेन/हिमेक्स/हरवेक्स मल्हम दिन में 2-3 बार लगाऐं। मक्खियों से बचाव के लिए घाव पर पट्टी बांधना लाभदायक है।
- मुर्गियों को बीमारियों से बचाने के लिए मुर्गीघरों में नमी मत होने दें। वर्षा की बौछारों से बचाव के लिए पर्दो के तौर पर पुरानी बोरियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। ज्यादा जानकारी के लिए स्थानीय पशु चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

*किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ट जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें । अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894-230395) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।*

30/6/2018

निदेशक
प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौ. स. कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी ।

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौ.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को वेबसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।
4. केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, धर्मशाला तथा शिमला, हिमाचल प्रदेश।
5. केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
6. प्रधान ग्राम पंचायत, सेहल तथा धरेड़, (बैजनाथ) को उचित कार्यवाही हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/-2188-92 Dated : 20/6/2018

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

4145